



Vikas sharma

18 Oct 1986

10:30 PM

Bijnor

Model: All-Dosha-Report

Order No: 121447901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 18/10/1986
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 22:30:00 घंटे
इष्ट _____: 40:23:42 घटी
स्थान _____: Bijnor
राज्य _____: Uttar Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 29:22:00 उत्तर
रेखांश _____: 78:09:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:17:24 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 22:12:36 घंटे
वेलान्तर _____: 00:14:46 घंटे
साम्पातिक काल _____: 00:00:09 घंटे
सूर्योदय _____: 06:20:31 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:44:29 घंटे
दिनमान _____: 11:23:59 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 01:20:55 तुला
लग्न के अंश _____: 18:58:49 मिथुन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मिथुन - बुध
राशि-स्वामी _____: मेष - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: अश्विनी - 4
नक्षत्र स्वामी _____: केतु
योग _____: वज्र
करण _____: कौलव
गण _____: देव
योनि _____: अश्व
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: ला-लाखन
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1908	आश्विन	26
पंजाबी	संवत : 2043	कार्तिक	2
बंगाली	सन् : 1393	कार्तिक	1
तमिल	संवत : 2043	आइपसी	2
केरल	कोल्लम : 1162	तुलम	1
नेपाली	संवत : 2043	कार्तिक	2
चैत्रादि	संवत : 2043	कार्तिक	कृष्ण 1
कार्तिकादि	संवत : 2043	आश्विन	कृष्ण 1

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 1
तिथि समाप्ति काल _____ : 25:53:01
जन्म तिथि _____ : 1
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : अश्विनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 25:34:58 घंटे
जन्म योग _____ : अश्विनी
सूर्योदय कालीन योग _____ : हर्षण
योग समाप्ति काल _____ : 11:03:12 घंटे
जन्म योग _____ : वज्र
सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
करण समाप्ति काल _____ : 13:18:42 घंटे
जन्म करण _____ : कौलव
भयात _____ : 56:15:25
भभोग _____ : 63:57:51
भोग्य दशा काल _____ : केतु 0 वर्ष 10 मा 1 दि

घात चक्र

मास _____ : कार्तिक
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : रविवार
नक्षत्र _____ : मघा
योग _____ : विष्कुम्भ
करण _____ : बव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : मेष
सूर्य _____ : कर्क
चन्द्र _____ : मेष
मंगल _____ : सिंह
बुध _____ : वृष
गुरु _____ : कन्या
शुक्र _____ : तुला
शनि _____ : मिथुन
राहु _____ : वृश्चिक

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

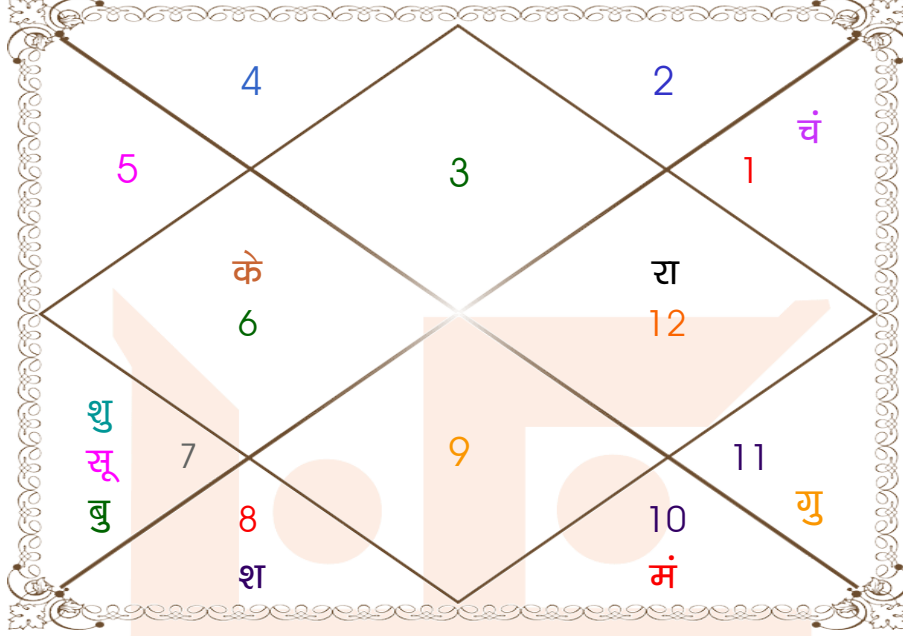
रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

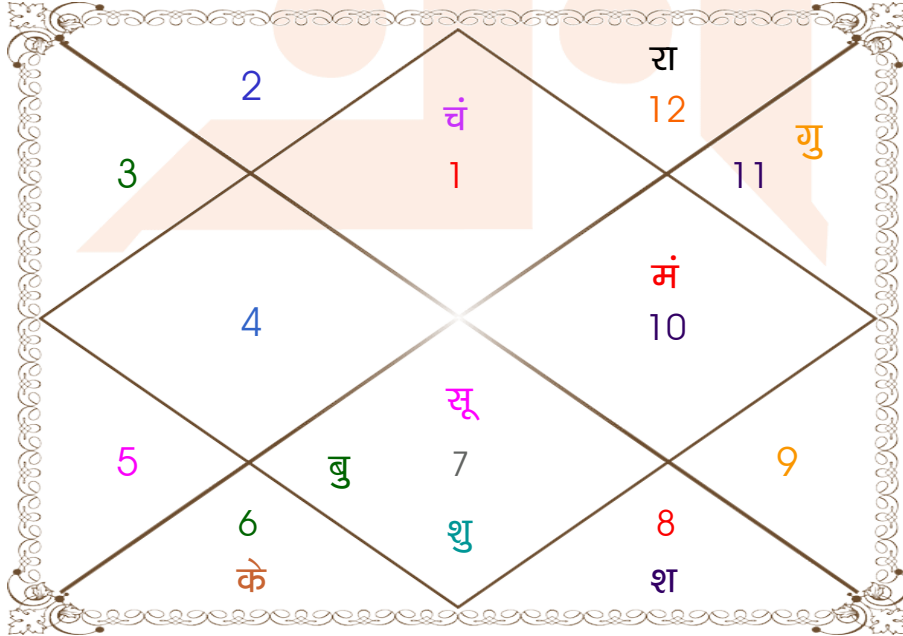
rajatkaushik265@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

रा	चं		ल
गु			
मं			
	श	शु सू बु	के

लग्न कुण्डली

	चं	रा
ल		गु
		मं
के	बु सू शु	श

विंशोत्तरी
केतु 0वर्ष 10मा 1दि
केतु

18/10/1986

20/08/2100

केतु	20/08/1987
शुक्र	20/08/2007
सूर्य	20/08/2013
चन्द्र	20/08/2023
मंगल	20/08/2030
राहु	19/08/2048
गुरु	19/08/2064
शनि	20/08/2083
बुध	20/08/2100

योगिनी

भ्रामरी 0वर्ष 5मा 22दि
भद्रिका

11/04/2023

10/04/2028

भद्रिका	21/12/2023
उल्का	20/10/2024
सिद्धा	10/10/2025
संकटा	20/11/2026
मंगला	10/01/2027
पिंगला	21/04/2027
धान्या	20/09/2027
भ्रामरी	10/04/2028

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मिथुन 01:52:43	मिथुन 18:58:49
2	कर्क 01:52:43	कर्क 14:46:36
3	कर्क 27:40:30	सिंह 10:34:23
4	सिंह 23:28:17	कन्या 06:22:10
5	कन्या 23:28:17	तुला 10:34:23
6	तुला 27:40:30	वृश्चिक 14:46:36
7	धनु 01:52:43	धनु 18:58:49
8	मकर 01:52:43	मकर 14:46:36
9	मकर 27:40:30	कुम्भ 10:34:23
10	कुम्भ 23:28:17	मीन 06:22:10
11	मीन 23:28:17	मेष 10:34:23
12	मेष 27:40:30	वृष 14:46:36

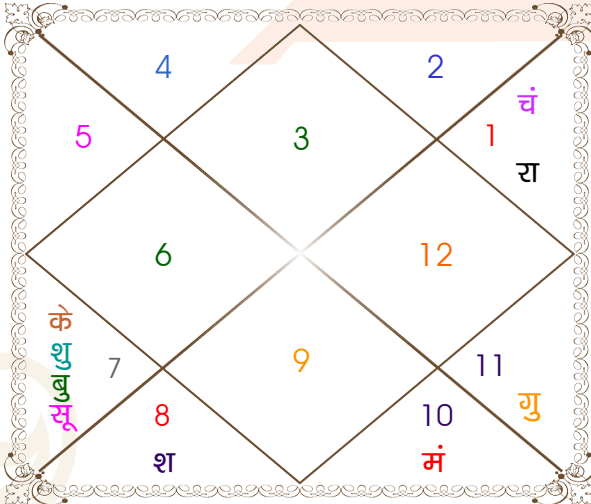
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	18:58:49
2	कर्क	11:27:19
3	सिंह	06:27:33
4	कन्या	06:22:10
5	तुला	11:09:31
6	वृश्चिक	16:44:39
7	धनु	18:58:49
8	मकर	11:27:19
9	कुम्भ	06:27:33
10	मीन	06:22:10
11	मेष	11:09:31
12	वृष	16:44:39

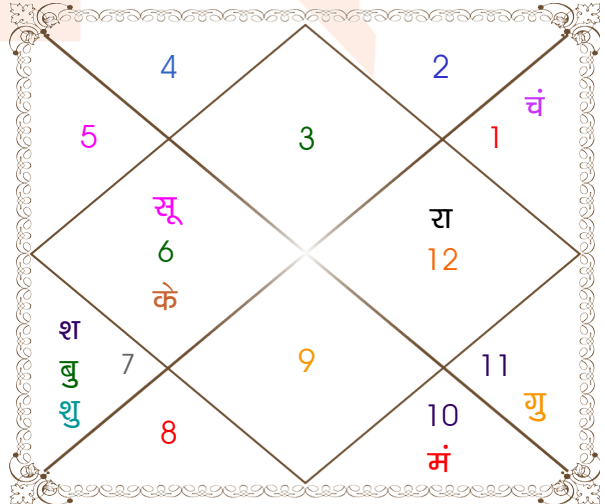
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती

चलित कुंडली



भाव कुंडली



पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

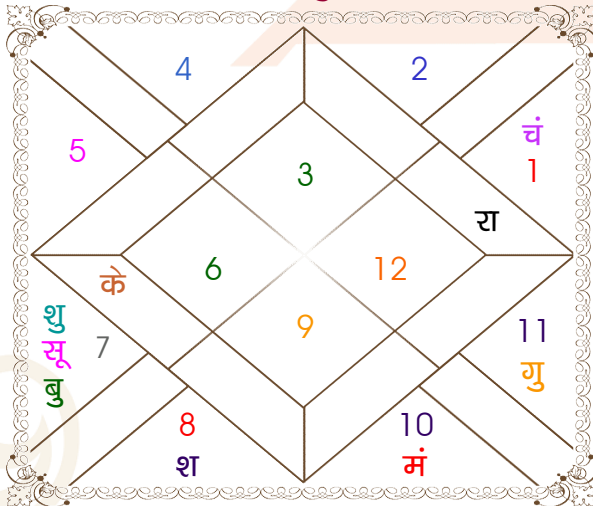
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----			----- अवस्था -----			ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	कलत्र	पितृ	बाल	भीत	नृत्यलिप्सा	0.19	34 %
चंद्र	ज्ञाति	मातृ	कुमार	निपीदित	प्रकाश	9.52	69 %
मंगल	पुत्र	भातृ	वृद्ध	दीप्त	आगम	13.65	36 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	मृत	मुदित	प्रकाश	3.88	27 %
गुरु	भातृ	धन	वृद्ध	शान्त	सभा	2.10	29 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	मृत	स्वस्थ	आगम	1.97	38 %
शनि	मातृ	आयु	युवा	खल	प्रकाश	4.35	29 %
राहु	---	ज्ञान	बाल	निपीदित	आगम	0.00	78 %
केतु	---	मोक्ष	बाल	खल	उपवेशन	0.00	78 %
कुल						35.67	

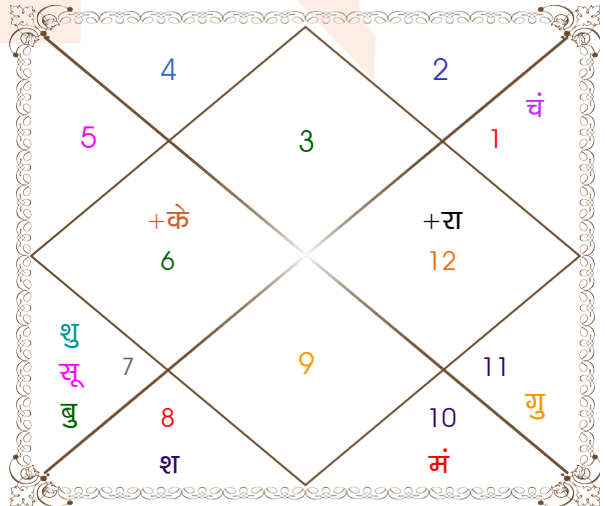
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती

चलित कुंडली



लग्न-चलित



पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 0 वर्ष 10 मास 1 दिन

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
18/10/1986	20/08/1987	20/08/2007	20/08/2013	20/08/2023
20/08/1987	20/08/2007	20/08/2013	20/08/2023	20/08/2030
00/00/0000	शुक्र 20/12/1990	सूर्य 08/12/2007	चंद्र 20/06/2014	मंगल 16/01/2024
00/00/0000	सूर्य 20/12/1991	चंद्र 07/06/2008	मंगल 19/01/2015	राहु 03/02/2025
00/00/0000	चंद्र 20/08/1993	मंगल 13/10/2008	राहु 20/07/2016	गुरु 10/01/2026
00/00/0000	मंगल 20/10/1994	राहु 07/09/2009	गुरु 19/11/2017	शनि 18/02/2027
00/00/0000	राहु 19/10/1997	गुरु 26/06/2010	शनि 20/06/2019	बुध 16/02/2028
00/00/0000	गुरु 19/06/2000	शनि 08/06/2011	बुध 19/11/2020	केतु 14/07/2028
00/00/0000	शनि 20/08/2003	बुध 13/04/2012	केतु 20/06/2021	शुक्र 13/09/2029
18/10/1986	बुध 20/06/2006	केतु 19/08/2012	शुक्र 18/02/2023	सूर्य 19/01/2030
बुध 20/08/1987	केतु 20/08/2007	शुक्र 20/08/2013	सूर्य 20/08/2023	चंद्र 20/08/2030

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
20/08/2030	19/08/2048	19/08/2064	20/08/2083	20/08/2100
19/08/2048	19/08/2064	20/08/2083	20/08/2100	19/10/2106
राहु 02/05/2033	गुरु 08/10/2050	शनि 23/08/2067	बुध 16/01/2086	केतु 16/01/2101
गुरु 26/09/2035	शनि 20/04/2053	बुध 02/05/2070	केतु 13/01/2087	शुक्र 19/03/2102
शनि 02/08/2038	बुध 27/07/2055	केतु 11/06/2071	शुक्र 13/11/2089	सूर्य 24/07/2102
बुध 18/02/2041	केतु 02/07/2056	शुक्र 11/08/2074	सूर्य 19/09/2090	चंद्र 22/02/2103
केतु 08/03/2042	शुक्र 03/03/2059	सूर्य 24/07/2075	चंद्र 19/02/2092	मंगल 22/07/2103
शुक्र 08/03/2045	सूर्य 20/12/2059	चंद्र 21/02/2077	मंगल 15/02/2093	राहु 08/08/2104
सूर्य 31/01/2046	चंद्र 20/04/2061	मंगल 02/04/2078	राहु 04/09/2095	गुरु 15/07/2105
चंद्र 02/08/2047	मंगल 27/03/2062	राहु 06/02/2081	गुरु 10/12/2097	शनि 24/08/2106
मंगल 19/08/2048	राहु 19/08/2064	गुरु 20/08/2083	शनि 20/08/2100	बुध 19/10/2106

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 0 वर्ष 10 मा 4 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शनि 10/01/2026 18/02/2027	मंगल - बुध 18/02/2027 16/02/2028	मंगल - केतु 16/02/2028 14/07/2028	मंगल - शुक्र 14/07/2028 13/09/2029	मंगल - सूर्य 13/09/2029 19/01/2030
शनि 15/03/2026 बुध 11/05/2026 केतु 04/06/2026 शुक्र 10/08/2026 सूर्य 30/08/2026 चंद्र 03/10/2026 मंगल 27/10/2026 राहु 26/12/2026 गुरु 18/02/2027	बुध 11/04/2027 केतु 02/05/2027 शुक्र 01/07/2027 सूर्य 19/07/2027 चंद्र 19/08/2027 मंगल 09/09/2027 राहु 02/11/2027 गुरु 20/12/2027 शनि 16/02/2028	केतु 24/02/2028 शुक्र 20/03/2028 सूर्य 28/03/2028 चंद्र 09/04/2028 मंगल 18/04/2028 राहु 10/05/2028 गुरु 30/05/2028 शनि 23/06/2028 बुध 14/07/2028	शुक्र 23/09/2028 सूर्य 14/10/2028 चंद्र 19/11/2028 मंगल 13/12/2028 राहु 15/02/2029 गुरु 13/04/2029 शनि 20/06/2029 बुध 19/08/2029 केतु 13/09/2029	सूर्य 19/09/2029 चंद्र 30/09/2029 मंगल 07/10/2029 राहु 27/10/2029 गुरु 13/11/2029 शनि 03/12/2029 बुध 21/12/2029 केतु 28/12/2029 शुक्र 19/01/2030
मंगल - चंद्र 19/01/2030 20/08/2030	राहु - राहु 20/08/2030 02/05/2033	राहु - गुरु 02/05/2033 26/09/2035	राहु - शनि 26/09/2035 02/08/2038	राहु - बुध 02/08/2038 18/02/2041
चंद्र 06/02/2030 मंगल 18/02/2030 राहु 22/03/2030 गुरु 19/04/2030 शनि 23/05/2030 बुध 22/06/2030 केतु 05/07/2030 शुक्र 09/08/2030 सूर्य 20/08/2030	राहु 15/01/2031 गुरु 26/05/2031 शनि 29/10/2031 बुध 17/03/2032 केतु 14/05/2032 शुक्र 25/10/2032 सूर्य 13/12/2032 चंद्र 05/03/2033 मंगल 02/05/2033	गुरु 27/08/2033 शनि 13/01/2034 बुध 17/05/2034 केतु 07/07/2034 शुक्र 30/11/2034 सूर्य 13/01/2035 चंद्र 27/03/2035 मंगल 17/05/2035 राहु 26/09/2035	शनि 08/03/2036 बुध 03/08/2036 केतु 03/10/2036 शुक्र 25/03/2037 सूर्य 16/05/2037 चंद्र 11/08/2037 मंगल 11/10/2037 राहु 16/03/2038 गुरु 02/08/2038	बुध 12/12/2038 केतु 04/02/2039 शुक्र 09/07/2039 सूर्य 25/08/2039 चंद्र 10/11/2039 मंगल 04/01/2040 राहु 22/05/2040 गुरु 23/09/2040 शनि 18/02/2041
राहु - केतु 18/02/2041 08/03/2042	राहु - शुक्र 08/03/2042 08/03/2045	राहु - सूर्य 08/03/2045 31/01/2046	राहु - चंद्र 31/01/2046 02/08/2047	राहु - मंगल 02/08/2047 19/08/2048
केतु 12/03/2041 शुक्र 15/05/2041 सूर्य 03/06/2041 चंद्र 05/07/2041 मंगल 28/07/2041 राहु 23/09/2041 गुरु 13/11/2041 शनि 13/01/2042 बुध 08/03/2042	शुक्र 07/09/2042 सूर्य 01/11/2042 चंद्र 31/01/2043 मंगल 05/04/2043 राहु 16/09/2043 गुरु 10/02/2044 शनि 01/08/2044 बुध 03/01/2045 केतु 08/03/2045	सूर्य 25/03/2045 चंद्र 21/04/2045 मंगल 10/05/2045 राहु 29/06/2045 गुरु 11/08/2045 शनि 02/10/2045 बुध 18/11/2045 केतु 07/12/2045 शुक्र 31/01/2046	चंद्र 18/03/2046 मंगल 19/04/2046 राहु 10/07/2046 गुरु 21/09/2046 शनि 17/12/2046 बुध 04/03/2047 केतु 05/04/2047 शुक्र 05/07/2047 सूर्य 02/08/2047	मंगल 24/08/2047 राहु 21/10/2047 गुरु 11/12/2047 शनि 10/02/2048 बुध 04/04/2048 केतु 26/04/2048 शुक्र 29/06/2048 सूर्य 18/07/2048 चंद्र 19/08/2048

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु 19/08/2048 08/10/2050	गुरु - शनि 08/10/2050 20/04/2053	गुरु - बुध 20/04/2053 27/07/2055	गुरु - केतु 27/07/2055 02/07/2056	गुरु - शुक्र 02/07/2056 03/03/2059
गुरु 01/12/2048 शनि 04/04/2049 बुध 23/07/2049 केतु 06/09/2049 शुक्र 14/01/2050 सूर्य 22/02/2050 चंद्र 28/04/2050 मंगल 13/06/2050 राहु 08/10/2050	शनि 03/03/2051 बुध 12/07/2051 केतु 04/09/2051 शुक्र 05/02/2052 सूर्य 23/03/2052 चंद्र 08/06/2052 मंगल 01/08/2052 राहु 17/12/2052 गुरु 20/04/2053	बुध 15/08/2053 केतु 02/10/2053 शुक्र 17/02/2054 सूर्य 31/03/2054 चंद्र 08/06/2054 मंगल 26/07/2054 राहु 27/11/2054 गुरु 18/03/2055 शनि 27/07/2055	केतु 16/08/2055 शुक्र 11/10/2055 सूर्य 28/10/2055 चंद्र 26/11/2055 मंगल 16/12/2055 राहु 05/02/2056 गुरु 21/03/2056 शनि 14/05/2056 बुध 02/07/2056	शुक्र 11/12/2056 सूर्य 29/01/2057 चंद्र 20/04/2057 मंगल 16/06/2057 राहु 09/11/2057 गुरु 19/03/2058 शनि 20/08/2058 बुध 05/01/2059 केतु 03/03/2059
गुरु - सूर्य 03/03/2059 20/12/2059	गुरु - चंद्र 20/12/2059 20/04/2061	गुरु - मंगल 20/04/2061 27/03/2062	गुरु - राहु 27/03/2062 19/08/2064	शनि - शनि 19/08/2064 23/08/2067
सूर्य 17/03/2059 चंद्र 11/04/2059 मंगल 28/04/2059 राहु 10/06/2059 गुरु 19/07/2059 शनि 04/09/2059 बुध 15/10/2059 केतु 01/11/2059 शुक्र 20/12/2059	चंद्र 29/01/2060 मंगल 27/02/2060 राहु 10/05/2060 गुरु 14/07/2060 शनि 29/09/2060 बुध 07/12/2060 केतु 04/01/2061 शुक्र 26/03/2061 सूर्य 20/04/2061	मंगल 10/05/2061 राहु 30/06/2061 गुरु 14/08/2061 शनि 07/10/2061 बुध 25/11/2061 केतु 14/12/2061 शुक्र 09/02/2062 सूर्य 26/02/2062 चंद्र 27/03/2062	राहु 05/08/2062 गुरु 30/11/2062 शनि 18/04/2063 बुध 20/08/2063 केतु 10/10/2063 शुक्र 04/03/2064 सूर्य 17/04/2064 चंद्र 29/06/2064 मंगल 19/08/2064	शनि 09/02/2065 बुध 15/07/2065 केतु 17/09/2065 शुक्र 19/03/2066 सूर्य 13/05/2066 चंद्र 13/08/2066 मंगल 16/10/2066 राहु 30/03/2067 गुरु 23/08/2067
शनि - बुध 23/08/2067 02/05/2070	शनि - केतु 02/05/2070 11/06/2071	शनि - शुक्र 11/06/2071 11/08/2074	शनि - सूर्य 11/08/2074 24/07/2075	शनि - चंद्र 24/07/2075 21/02/2077
बुध 09/01/2068 केतु 07/03/2068 शुक्र 18/08/2068 सूर्य 06/10/2068 चंद्र 27/12/2068 मंगल 22/02/2069 राहु 19/07/2069 गुरु 28/11/2069 शनि 02/05/2070	केतु 26/05/2070 शुक्र 01/08/2070 सूर्य 22/08/2070 चंद्र 24/09/2070 मंगल 18/10/2070 राहु 18/12/2070 गुरु 10/02/2071 शनि 15/04/2071 बुध 11/06/2071	शुक्र 21/12/2071 सूर्य 17/02/2072 चंद्र 23/05/2072 मंगल 30/07/2072 राहु 19/01/2073 गुरु 22/06/2073 शनि 22/12/2073 बुध 04/06/2074 केतु 11/08/2074	सूर्य 28/08/2074 चंद्र 26/09/2074 मंगल 16/10/2074 राहु 07/12/2074 गुरु 23/01/2075 शनि 18/03/2075 बुध 07/05/2075 केतु 27/05/2075 शुक्र 24/07/2075	चंद्र 10/09/2075 मंगल 14/10/2075 राहु 08/01/2076 गुरु 25/03/2076 शनि 25/06/2076 बुध 15/09/2076 केतु 19/10/2076 शुक्र 23/01/2077 सूर्य 21/02/2077

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	9
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 3, 6, 9, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

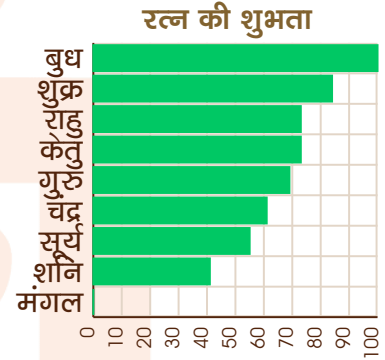
rajatkaushik265@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य, सुख
हीरा	शुक्र	84%	सन्तति सुख, कम खर्च
गोमेद	राहु	73%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	73%	सुख, सन्तति सुख
पुखराज	गुरु	69%	भाग्योदय, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	61%	धनार्जन, धन
माणिक्य	सूर्य	55%	सन्तति सुख, पराक्रम
नीलम	शनि	41%	शत्रु व रोग, दुर्घटना, नेष्ट भाग्य
मूंगा	मंगल	0%	दुर्घटना, हानि, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	20/08/1987	34%	47%	0%	100%	69%	90%	16%	61%	86%
शुक्र	20/08/2007	34%	47%	0%	100%	69%	97%	52%	80%	80%
सूर्य	20/08/2013	67%	67%	0%	100%	75%	72%	16%	61%	61%
चंद्र	20/08/2023	61%	73%	0%	100%	69%	84%	41%	61%	61%
मंगल	20/08/2030	61%	67%	12%	100%	75%	84%	41%	61%	80%
राहु	19/08/2048	34%	47%	0%	100%	69%	90%	52%	86%	61%
गुरु	19/08/2064	61%	67%	0%	100%	81%	72%	41%	73%	73%
शनि	20/08/2083	34%	47%	0%	100%	69%	90%	58%	80%	61%
बुध	20/08/2100	61%	47%	0%	100%	69%	90%	41%	73%	73%

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/10/1986-17/12/1987	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

सम
शुभ
सम
सम
अशुभ

क्षेत्र

शत्रु से कष्ट
व्यावसाय
अल्प बचत
कम खर्च
धन

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी कुंडली में जन्म के समय मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जनित एवं रक्त विकार से आप यदा कदा कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं उनके स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा तथा इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव भी नहीं होगा। साथ ही समय समय पर आपके सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। इसके प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व किसी वार्ता में बाधा भी आ सकती है परन्तु अन्त में आपको सफलता प्राप्त होगी तथा सामान्यतया सुख पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा।

आपकी कुंडली में मंगल अष्टम भाव में है अतः आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा गर्मी आदि से आपको किंचित परेशानी की अनुभूति हो सकती है। सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आय स्रोतों में वृद्धि होगी। आवश्यक मात्रा में लाभार्जन भी होता रहेगा परन्तु इस में आपको अधिक परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे। साथ ही वाणी में ओजस्विता का भाव भी रहेगा परन्तु धनार्जन अच्छा रहेगा तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा। पराक्रम में वृद्धि होगी जिससे आप अपने उन्नति मार्ग को प्रशस्त करने में समर्थ रहेंगे।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको ऐसी

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु की स्थिति होनी चाहिए। इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा ऐश्वर्य आदि से आप सुसम्पन्न होकर आनन्दपूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे। साथ ही परस्पर संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से पृथक रहता है। नाना-नानी, दादा-दादी का स्नेह आंशिक रूप में मिलता है। जातक को माता-पिता का विरह सहना पड़ता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। जातक की सन्तान कभी-कभी अस्वस्थ हो जाती है और जातक को थोड़ा बहुत चिन्ता परेशानी घेर लेती है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। नौकरी-व्यवसाय में व्यवधान उपस्थित होता है पर कालान्तर में वह स्वतः समाप्त हो जाता है। कभी जातक को पदच्युत होने का भय भी होता है और व्यापार व्यवसाय में परिश्रम करने के बाद भी विशेष रूप से जमता नहीं या आंशिक नुकसान उठाना पड़ता है। भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है एवं जातक को आंशिक रूप में क्लेश भोगना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे सब षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर वे लोग अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं हो पाते। मित्रगण समय-समय पर धोखा दे जाते हैं। जिससे जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और सरकारी पदाधिकारी से अनबन रहती है तथा राज्यपक्ष से भी क्षति प्राप्त होती है। जातक की स्थिति कभी राजा तो कभी रंक जैसा जीवन व्यतीत होता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में रोग व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। कभी चोट लगने का भय भी होता है। जातक को सुख शान्ति के लिए संघर्ष करना पड़ता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है एवं उसमें प्रसिद्धि भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव में नीच का सूर्य स्थित है।
- नवम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में सूर्य और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मिथुन लग्न की हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं आपका मस्तिष्क सदैव विचारमान व गतिमान रहता है इसलिए हर समय कुछ न कुछ आपके मस्तिष्क में चलता रहता है। लग्न स्वामी बुध होने की वजह से कठिन से कठिन काम को भी आप अपनी बुद्धि कौशल से आसान बना लेते हैं। द्विस्वभाव लग्न होने से आपके स्वभाव में भी दोहरापन (वास्तव में लचीलापन) होता है। समय के अनुसार अपने व्यवहार को बदल लेना अथवा हर परिस्थिति में स्वयं को ढाल लेना, वातावरण को अपने अनुसार ढाल लेना या स्वयं वातावरण के अनुसार ढल जाना आपके स्वभाव की विशेषता होती है। आपका व्यवहारिक ज्ञान अच्छा होता है। हर चीज को सीखने एवं पाने की ललक आप में रहती है। आप खाली नहीं बैठ सकते हैं। हर

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

समय व्यस्त रहना कुछ नया करने की इच्छा आपमें रहती है। आपका हँसमुख स्वभाव आपको हर जगह लोकप्रिय बनाता है।

6, 8, व 12 भाव त्रिक भाव के नाम से जाने जाते हैं। त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता है। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

मिथुन लग्न में छठे भाव व एकादश भाव के स्वामी मंगल हैं। आप अपने साहस का उपयोग अनैतिक कार्यों के लिए कर सकते हैं, मिथ्या वचन बोलने से भी आप बचे, तथा युद्ध अथवा लड़ाई हेतु सदैव तत्पर हो सकते हैं। शत्रुओं पर विजय प्राप्ति सहज हो जाती है। अपने बड़े भाई-बहनों से वैर-भाव रखने वाले हो सकते हैं। विष, अग्नि, शास्त्र सेपीड़ित हो सकते हैं।

अष्टम व नवम भाव के स्वामी शनि हैं। अष्टम भाव के स्वामी शनि के प्रभाव से आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी, भाग्यवृद्धि में बाधक, अधिनस्थों की ओर से सहयोग में कमी, लम्बी अवधि के रोग, ऋण आपके कार्यों में व्यर्थ का विलम्ब कर सकते हैं। इस योग की अशुभता से रोजगार प्राप्ति में व्यवधान, धन संग्रह में बाधा का सामना करना पड़ सकता है।

पंचम भाव और द्वादश भाव के स्वामी शुक्र हैं। शुक्र पंचमेश व द्वादशेश होकर आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता है। इसके अतिरिक्त शुक्र व्यय, हानि, दंड व अलगाव दे सकता है।

आपकी कुंडली में शनि सौतेली माता से कष्ट, संपत्तिनाश, अल्पभाषी, एकांतप्रिय, शारीरिक कष्ट का कारक बन सकता है।

यह आपके शारीरिक सौन्दर्य में न्यूनता, आय क्षेत्र में बाधाएं, अल्प आय, आर्थिक चिंता, कुटुंब से अल्प सुख, पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। दीर्घकालीन रोग आपकी चिंताएं बढ़ा सकते हैं। मंगल का अष्टम भाव में स्थित होने से आप मांगलिक योग से पीड़ित हैं। दाम्पत्य जीवन कष्टकारी हो सकता है। संतान को भी कष्ट की संभावनाएं, प्रवास में धन हानि, मुख, नेत्र व कान के रोग, ऋण ग्रस्तता बढ़ोतरी हो रही है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।



पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया मिथुन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ विब्रम शांत एवं हास्य प्रवृत्ति से युक्त होते हैं। वे बुद्धिमान होते हैं तथा उनके मुख पर बुद्धिमता की झलक स्पष्ट परिलक्षित होती है परन्तु यदा कदा चंचलता का भाव भी इनमें पाया जाता है ये स्वाभिमानी व्यक्ति होते हैं तथा स्वपरिश्रम योग्यता एवं पराक्रम से जीवन में वांछित सफलताएं अर्जित करते हैं तथा सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों को प्राप्त करके सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं। संगीत एवं कला के प्रति इनकी अभिरुचि रहती है तथा नए सिद्धांतों एवं मूल्यों का प्रतिपादन करने में भी समर्थ रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा अपने समस्त सांसारिक महत्व के कार्यों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे। इससे समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आप में सहिष्णुता तथा उदारता का भाव भी विद्यमान रहेगा। अतः अवसरानुकूल सुख दुःख में अन्य लोगों को अपना सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगे।

मित्रों के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा सरकारी या उच्चाधिकारी वर्ग से आपके नित्य सम्पर्क रहेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य लोग आपसे आकर्षित एवं प्रभावित रहेंगे। लेखन गणित तथा व्यापारिक कार्यों में आपकी विशेष रुचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से इन क्षेत्रों में इच्छित उन्नति प्राप्त करके अपना जीवन यापन करेंगे।

लग्न में लग्नेश बुध की राशि के प्रभाव से आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। आपकी वाणी भी मधुर रहेगी तथा अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का उपयोग करेंगे एवं अपने वाक्चातुर्य से अपने कार्यों को सिद्ध करने में समर्थ होंगे। आपका स्वभाव परिश्रमी होगा तथा परिश्रमपूर्वक आप अपने उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे जिससे समाज या कार्यक्षेत्र में आप एक सम्मानित पुरुष समझे जाएंगे।

जीवन में इच्छित धनैश्वर्य एवं वैभव को अर्जित करने में आप समर्थ होंगे तथा आयस्रोत भी आपके एक से अधिक होंगे फलतः आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी संगीत कला साहित्य एवं अन्य शास्त्रों पर आपका अधिकार रहेगा तथा अपनी उत्साही एवं पराक्रमी प्रवृत्ति से आप इनमें इच्छित यश तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होने की संभावना रहेगी। साथ ही कृषि या जमीन जायदाद संबंधी लाभ भी आप जीवन में अर्जित कर सकते हैं।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा निष्ठापूर्वक समय समय पर धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। आप एक सदाचारी पुरुष होंगे तथा नैतिकता का अनुपालन करने में सदैव तत्पर रहेंगे। अतः अन्य जन आपको हार्दिक आदर प्रदान करेंगे तथा एक सम्मानित व्यक्ति के रूप में आपका अपने क्षेत्र में प्रभाव रहेगा।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

इस प्रकार आप परिश्रमी, उत्साही, साहसी एवं पराक्रम के भाव से युक्त होकर सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए अपना जीवन व्यतीत करेंगे।



पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कर्क राशि स्थित है जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप भावुक प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा यदाकदा अधिक बोलने वाली प्रवृत्ति भी रहेगी। समाज में आप एक सम्माननीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथायोग्य सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी वाणी भी मधुर होगी तथा अपने विचारों को आप स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में समर्थ रहेंगे। फलतः सभी लोग आपकी वाणी से प्रभावित होंगे।

परिवार में सुख शान्ति तथा समृद्धि उत्तम रहेगी तथा परिवार की शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही संतति से भी आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपको सुन्दर तथा स्वादिष्ट भोजन करना रुचिकर लगेगा। विशेष रूप से मिष्ठान के आप प्रिय रहेंगे तथा रुचिपूर्वक इनका भक्षण करेंगे लेकिन इससे यदा कदा आपको स्वास्थ्य संबंधी परेशानी भी हो सकती है अतः इनकी अधिकता की उपेक्षा करनी चाहिए। साथ ही धार्मिक उत्सवों को भी आप समय समय पर परिवार में आयोजन करते रहेंगे। आप अपने विचारों की पुष्टि में हमेशा ठोस तर्कों को प्रस्तुत करेंगे जिसे सभी लोग स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त लकड़ी के व्यापार से आप लाभ अर्जित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पुत्रों का आपके प्रति विशेष स्नेह रहेगा तथा आपकी सेवा में वे सर्वदा तत्पर रहेंगे।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में कन्याराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा केतु भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको परिश्रम एवं पराक्रम से ही भौतिक सुख संसाधनों एवं आधुनिक उपकरणों की प्राप्ति होगी। यद्यपि इनकी प्राप्ति में किंचित विलम्ब भी हो सकता है लेकिन इससे आपको निराश नहीं होना चाहिए तथा अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहना चाहिए।

जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त होगा। नाना या नानी के पक्ष से आपको न्यूनाधिक रूप से धन सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है जिससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी। लेकिन जीवन में आपको विवादित सम्पत्ति से सर्वदा दूर रहना चाहिए तथा इसका किसी भी प्रकार का क्रय विक्रय नहीं करना चाहिए अन्यथा आपको अनावश्यक समस्याओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। आपको रहनेके लिए अच्छा घर मिलेगा तथा इसकी स्थिति किसी मध्यम कालोनी में होगी। इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने में आप नित्य तत्पर होंगे तथा पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपके पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे परंतु आपसी संबंधों में मधुरता अल्प ही रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी आपको मिलेगा परंतु इसमें विलम्ब होगा तथा मध्यावस्था के बाद ही आप इसका उपयोग करने में समर्थ होंगे।

आपकी माता तेजस्वी शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी। पारिवारिक जनों पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा तथा सभी सदस्यों का पूर्ण ध्यान रखेंगी परंतु यदा-कदा उनके स्वभाव से अन्य जन उनसे असुविधा की अनुभूति कर सकते हैं। आपके प्रति उनके मन में प्रबल वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर आपको नैतिक एवं आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होगी। आप भी सुख दुख में इनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे लेकिन सैद्धांतिक मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधों में मधुरता में कमी आएगी। अतः ऐसी स्थितियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा परंतु अपनी योग्यता एवं बुद्धिमता से आप संतोषजनक परिणाम अर्जित करने में समर्थ होंगे। स्नातक परीक्षा भी आप परिश्रम से ही उत्तीर्ण करेंगे। यदि आप किसी तकनीकी शिक्षा से प्रमाण पत्र या डिप्लोमा अर्जित करें तो इसमें आपको इच्छित मात्रा में सफलता प्राप्त होगी तथा आपके मन में उत्साह की वृद्धि होगी।

नैसर्गिक पापी ग्रह केतु की चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव से मध्यावस्था के बाद आपको रक्तचाप या हृदय संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अतः यदि आप युवावस्था से ही खान पान का विशेष ध्यान रखें तथा ऐसे पदार्थों का सीमित मात्रा में उपयोग करें जिनसे रक्तचाप प्रभावित होता हो तो उपरोक्त समस्याओं में कमी आ सकती है तथा आप सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत कर सकते हैं।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में तुला राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी शुक्र है। बुध भी लग्नेश होकर पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगे। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे साथ ही कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान आप अपनी बुद्धि से करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में भी आपकी रुचि होगी तथा इन ग्रंथों का अध्ययन करके वांछित मात्रा में ज्ञान अर्जित करेंगे। बुध के प्रभाव से साहित्य या कविता लेखन, गणित एवं ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान भी आपको होगा तथा इस क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि भी अर्जित कर सकते हैं जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा एक विद्वान के रूप में आपकी प्रतिष्ठा होगी।

शुक्र की राशि में पंचमभाव में बुध के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी परंतु आपका प्रेम आदर्शवाद एवं मर्यादा की सीमा में होगा तथा इसको आप केवल मनोरंजन या समय व्यतीत करने का समाधान नहीं मानेंगे। अतः आपका प्रेम प्रसंग विवाह के रूप में भी परिवर्तित हो सकता है जिससे आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा संतति में कन्याओं की संख्या पुत्र से अधिक होगी लेकिन सभी बच्चे बुद्धिमान एवं गुणवान होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से जीवन में उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता पिता के वे आज्ञाकारी होंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को माता पिता की सलाह से ही सम्पन्न करेंगे जिससे परस्पर सद्भाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति उनमें विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्या का समाधान माता से ही करवाना अधिक पसंद करेंगे लेकिन मान सम्मान एवं श्रद्धा का भाव माता पिता के प्रति समान रूप से रहेगा।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चे आशातीत उन्नति करेंगे तथा अच्छे अंको से अपनी परिक्षाओं को उत्तीर्ण करके उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करेंगे। वे उच्च पदों पर भी नियुक्त हो सकते हैं। इसके वे स्वभाव से विनम्र एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे जिससे आपके सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। अपने बच्चों पर आपको गौरव होगा तथा वे भी वृद्धावस्था में आपकी श्रद्धा पूर्वक सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है सामान्यतया धनु राशि की सप्तम भाव में स्थिति के कारण जातक का सहयोगी पुष्ट शरीर वाला बुद्धिमान एवं कार्य कुशल होता है तथा बुध के प्रभाव से उसमें विद्वता कलाप्रियता एवं सहिष्णुता का भाव भी रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी बुद्धिमान विदुषी एवं सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा कला के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा। साथ ही सांसारिक कार्यों में वह निपुण होंगी तथा कुशलता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न धर्म के प्रति भी उनके मन में श्रद्धा होगी तथा सहिष्णुता के भाव से भी युक्त होंगी इसके अतिरिक्त वह एक कर्तव्य परायण महिला होंगी एवं समाज तथा परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी गौरवर्ण की सुंदर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य होगा। शारीरिक रूप से पुष्ट होंगी एवं अंग प्रत्यंग भी सुडौल रहेंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा एवं कला के प्रति समर्पण की भावना रहेगी सौन्दर्य में अभिवृद्धि के लिए वह अवसरनुकूल सौन्दर्य प्रसाधनों का भी उपयोग करेंगी। उनके शरीर में अग्नि तत्व राशि के प्रभाव से पतलापन रहेगा जिससे सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व आकर्षक बना रहेगा।

आपका विवाह विज्ञापन के द्वारा सम्पन्न होगा या आप स्वेच्छ से प्रेम विवाह सम्पन्न करेंगे। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव होगा। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों को एक दूसरे की सलाह एवं सहमति से पूरा करेंगे। आप दोनों सहनशील स्वभाव के होंगे अतः एक ही प्रवृत्ति होने के कारण आपसी संबंधों में मधुरता होगी तथा दाम्पत्य जीवन का पूर्ण आनंद उठाएंगे।

आपका ससुराल किसी धनाढ्य एवं सम्मानित परिवार से होगा फलतः विवाह के समय आपको ससुराल से प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। सास ससुर से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनको वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। वे भी आपको पुत्रवत स्नेह देंगे तथा महत्वपूर्ण मामलों में सलाह या सहमति का भी आदान प्रदान होगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की सेवा एवं सम्मान की भावना होगी तथा श्रद्धा पूर्वक उनकी सेवा में तत्पर रहेंगी एवं अपनी और से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी साथ ही देवर एवं ननदों को भी अपने सद्व्यवहार एवं मृदुवाणी से प्रसन्न रखेंगी तथा वे भी उनको वांछित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इससे पारिवारिक शांति बनी रहेगी।

व्यापार या किसी महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा इससे आपको वांछित लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। साथ ही राहु भी दशम भाव में ही स्थित है। मीन राशि जलतत्व एवं राहु वायुतत्व ग्रह है अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र श्रमसाध्य होने के साथ साथ बौद्धिक क्रिया प्रधान भी होगा तथा इसमें आप समय समय पर परिवर्तन भी करेंगे। इन परिवर्तनों से आपको उचित लाभ की प्राप्ति होगी तथा मानसिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए वायु सेना, एयर लाइंस, जहाजरानी, खनिज एवं खान विभाग, पेट्रोलियम, भारी उद्योग, फैक्टरी कर्मचारी तथा राजनीति का क्षेत्र उपयुक्त एवं लाभदायक रहेगा। इन विभागों तथा क्षेत्रों में आजीविका से आप वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। साथ ही उन्नति के मार्ग सतत प्रशस्त रहेंगे। अतः आपको चाहिए कि उपरोक्त विभागों या क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका कार्य का चयन करें जिससे आप उज्ज्वल भविष्य बनाने में समर्थ हो सकेंगे।

व्यापारिक दृष्टि कोण से आपके लिए पेट्रोल एवं मदिरा का व्यापार विशेष लाभदायक रहेगा तथा इन क्षेत्रों में व्यापार करने से आपको प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा। साथ ही लोहे का कार्य फैक्ट्री, प्रेस, खेती या बागवानी आदि से भी वांछित मात्रा में उन्नति करेंगे तथा इन क्षेत्रों में नवीन आयाम स्थापित करने में समर्थ होंगे। अतः आपको यत्नपूर्वक इन्हीं क्षेत्रों में अपना व्यापार स्थापित करना चाहिए।

राहु की मीन राशि में दशम भावस्थ स्थिति के प्रभाव से जीवन में आप सम्मानित जीवन व्यतीत करेंगे तथा किसी उच्च पद एवं अधिकार की भी प्राप्ति होगी। साथ ही विभिन्न संस्थाओं में भी आप किसी पदाधिकारी के रूप में मनोनीत या नियुक्त होंगे। यद्यपि दशमभावस्थ नैसर्गिक पापीग्रह राहु के प्रभाव से इसमें विलम्ब होगा परन्तु इससे आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए तथा ईमानदारी एवं परिश्रम से अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिताजी परिश्रमी तेजस्वी एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अन्य जनों को अपने उत्तम कार्य कलापों तथा पराक्रमी कार्यों से प्रभावित करने में समर्थ होंगे। लेकिन राहु के प्रभाव से यदा कदा वे क्रोध के भाव का भी प्रदर्शन कर सकते हैं। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य का भाव रहेगा तथा उच्चस्तर पर शिक्षा दीक्षा करने की व्यवस्था करेंगे। साथ ही कार्य क्षेत्र में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा उनके सहयोग एवं प्रभाव से आपको प्रचुर मात्रा में उन्नति एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। आपके परस्पर संबंध सामान्यतया शुभ एवं मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक मतभेद की प्रबलता रहेगी लेकिन इनमें क्षणिकता होगी तथा परस्पर सामंजस्य स्थापित करने में समर्थ होंगे।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें अष्टम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमेंद्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें तृतीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत उत्तमरहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपकीआय में वृद्धि होगी। लग्न स्थान का गुरु नवीन विचार धारा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने नयेव्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं औरकम समय में उत्तम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। साझेदारी या शेयर बजार में आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

02 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आपको वरिष्ठ लोगों या बड़े अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगाजिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। धन संचय करने में आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी। 02 जून के बाद आपको रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपको रुके हुए पैसे मिल सकते हैं। इस वर्ष आपके परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले होथों से खर्च करेंगे। निवेश में उत्तम फल मिलने की सम्भावना है।

31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर तृतीय स्थान में होगा। उस समय सामाजिक व धार्मिक कार्यों पर आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनिग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। यदि आप विवाह के योग्य है तो विवाह हो सकता है।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

02 जूनके बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा। पिताजी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 31 अक्टूबर के बाद आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि से आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है। यदि आपकी सन्तान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। इस वर्ष आप के बच्चे अच्छे काम करेंगे। आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में हमेशा सकारात्मक विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी सही रखेंगे। यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

25 नवम्बर के बाद राहु ग्रह का गोचर अष्टम स्थान में हो रहा है। उस समय अचानक आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः वर्षान्त में अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना अधिक जरूरी है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है।

पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। 02 जून के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। जिन जातको की नौकरी अभी तक नहीं लगी है, 02 जून के बाद उन लोगों को नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से यात्राओं के प्रबल योग बन रहे हैं। 02 जून के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे और 31 अक्टूबर के बाद आपकी

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। 02 जून के बाद मन्त्र सिद्ध व गुप्त विद्यों की ओर आपका रुझान बढ़ेगा।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके समने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्रणायाम करें।



पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि दशम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं दशम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष अष्टम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत बढ़िया रहेगा। दशम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने कार्य क्षेत्र में अच्छा सफलता प्राप्त करेंगे। बड़े अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से कुछ गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट उत्पन्न करने की कोशिश कर सकते हैं। आप अपने विवेक से उन पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे।

26 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके आय के स्रोत में वृद्धि होगी। व्यापारिक व्यक्तियों को इस समय के अंतराल में अच्छा लाभ होगा। आपको मित्रों का भी भरपूर सहयोग मिलेगा। यदि आप अपने भाई के साथ कार्य कर रहे हैं तो बहुत अच्छा उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यापारियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आर्थिक संपन्नता बनी रहेगी। रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता से आपकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा। इस समय के अंतराल में आप इच्छित निवेश करेंगे। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके कुछ अनावश्यक खर्च भी हो सकते हैं।

26 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम के स्रोत में वृद्धि होगी। कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाईयों का अहम सहयोग होगा। मांगलिक कार्यों में भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। 26 नवम्बर के बाद आपको भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का पूर्वार्द्ध पारिवारिक रूपसे अच्छा रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक-दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनी रहेगी। परिवार में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। अष्टम स्थान का राहु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध खराब कर सकता है।

26 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। गर्भाधान के लिए समय अच्छा चल रहा है।

26 जून से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। इस समयान्तराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। आपकी शारीरिक उर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहें। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें जिससे आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आप कभी कभी छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। परन्तु गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप जल्दी अच्छे हो जाएंगे। 26 नवम्बर से आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने कारण आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। विद्यार्थियों के लिए यह समय शुभ रहेगा।

26 जून के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यापार के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है। परन्तु 26 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

26 नवम्बर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। पर्यटन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। यात्रा करते समय सावधान रहें क्योंकि अष्टम स्थान का राहु अचानक दुर्घटना दे सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्य के लिए बढ़िया रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 26 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 26 नवम्बर के बाद अपने परिवार में सुख, शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्तों को रोटी में गुड़ डालकर खिलाएं या राहु ग्रह का ऊँ भ्रां भ्रौं सं राहवे नमः मन्त्र का जाप करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में कुछ विरोधी या गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं।

वर्षारम्भ में उन्नति के लिए नये नये तरीके अपनाएं। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। प्रोपर्टी डीलर या कमीशन पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की उन्नति होगी। सप्तम स्थान का राहु साझेदारी में कार्य करने वालों के लिए अच्छा नहीं है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से भूमि, भवन व वाहन इत्यादि का सुख मिलेगा। भौतिक सुख-सुविधाओं पर आप अधिक खर्च करेंगे। फरवरी के बाद आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। निवेश के लिए समय काफी अच्छा चल रहा है परन्तु अष्टम स्थान का राहु कभी कभी अनावश्यक खर्च करा सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी आर्थिक उन्नति में आपके भाईयों एवं परिवार के लोगों का पूर्ण सहयोग होगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। आपका पत्नी के स्वास्थ्य पर भी पैसा खर्च हो सकता है। इस अवधि में वसीयत इत्यादि मिलने की भी संभावनाएं बन रही हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। चतुर्थ स्थान का गुरु पारिवारिक सुख प्रदान करने वाला है। पूरे परिवार में सुख शांति का वातावरण बना रहेगा। मांगलिक कार्य संपन्न होने के योग बन रहे हैं। परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो सफलता प्राप्त हो सकती है।

28 फरवरी के बाद गुरु के तृतीय भाव में गोचर करने से आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाओं को चोट पहुंच सकती है। अतः अच्छा यही है कि विपरीत परिस्थितियों के लिए अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

विकसित करें। 24 जुलाई के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

संतान

यह वर्ष संतान की तरक्की के योग लेकर आ रहा है। शिक्षा के लिए समय बहुत अनुकूल हो रहा है। परिवार की उन्नति के लिए आपकी संतान नवीन योजनाएं बनाएं।

संतान के साथ प्रेम व समन्वय में मधुरता आएगी। घर का वातावरण उत्तम होने के साथ-साथ सामाजिक सम्मान बढ़ेगा। 24 जुलाई के बाद का समय आपके लिए शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में स्वास्थ्य बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। स्वास्थ्य संबंधी किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

तनाव कम करने के लिए इस अवधि में आप अपने मन को एकाग्र कर योग क्रियाएं कर सकते हैं। इससे उत्साह का संचार होगा और आप अपने को स्वस्थ बनाए रखने में कामयाब रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर के लिए उत्तम रहेगा। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार करेंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर में की भावना ना आने दें। 23 फरवरी के बाद समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए विशेष शुभ है। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपके माता-पिता को धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए स्थानान्तरण के प्रबल योग बने हुए हैं। यह परिवर्तन आपके हित में होगा। 28 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

24 जुलाई के बाद आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष यदि किसी तीर्थयात्रा या कोई धार्मिक कार्य करने जा रहे हैं तो

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

उसको योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा धार्मिक कार्य में असफलता या पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। 24 जुलाई के बाद पूरे परिवार के साथ कोई विशेष धार्मिक आयोजन जैसे- भगवती जागरण इत्यादि कर सकते हैं।

- भगवान गणेश व माँ दुर्गा की आराधना करें।
- गौ सेवा करें व अपने भोजन का पहला भाग गाय को खिलाएं।
- राहु मन्त्र का जाप करें या राहु की वस्तुओं का दान करें।



पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में ही आप कोई नया व्यापार शुरू करेंगे जिसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। उच्चअधिकारियों या वरिष्ठ लोगों की सहयोग मिलती रहेगी। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। 29 मार्च से आपके कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान आ सकता है। शत्रु व विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती है।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन में समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। व्यापारिक व्यक्ति अपने कर्मचारियों व नौकरों पर विशेष ध्यान देना चाहिए नहीं तो सप्तमस्थ राहु के कारण अचानक वे आपका साथ छोड़ सकते हैं। साझेदारी में काम करने वाले व्यक्ति अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम होगा। आय भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह का संयुक्त गोचरीय प्रभाव धनागम के स्रोतों में वृद्धि करेगा। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। 29 मार्च से पारिवारिक सदस्यों के स्वास्थ्य पर धन का व्यय होगा जिससे आर्थिक उन्नति रुक सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह के अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है। सट्टा, लॉटरी, या शेयर इत्यादि से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थस्थ मंगल के प्रभाव से आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार से जुड़े हर मामलों में बहुत सावधानी

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

बरतने की आवश्यकता है। आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध खराब हो सकता है। 29 मार्च के बाद आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी। अतः अच्छा यही होगा कि विपरीत परिस्थितियों से लड़ने के लिए आप अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें।

25 अगस्त से आपका घरेलम वातावरण अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। परिवार में सदस्यों की बढ़ोत्तरी होगी। 05 अक्टूबर के बाद आपके प्रेम संबंधों में मधुरता आएगी। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। गर्भ धारण का अच्छा समय है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वह अपने बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे परन्तु 29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के योग बन रहे हैं। उनके पराक्रम में वृद्धि होगी। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आपका यश बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन करेंगे।

29 मार्च के बाद स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। गुरु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। 25 अगस्त के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर चोट चपेट या दुर्घटना की स्थिति बन रही है। अतः कोई भी कार्य करते समय एकाग्रता बहुत जरूरी है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठतम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ उपलब्धी प्राप्त करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी समय उत्तम है। करियर में भी अच्छी सफलता मिलेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी सफल होंगे परन्तु 29 मार्च के बाद करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यवसायिक रूप से भी समय अच्छा नहीं रहेगा।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

05 अक्टूबर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। 08 अगस्त के बाद विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

यात्रा के दौरान छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। समय-समय पर आप गरीबों की सहायता करेंगे। वर्षान्त में मन्त्र साधना भी कर सकते हैं।

- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल मजदूरों या गरीबों में दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।
- अपने माता-पिता की सेवा करें एवं अपने से बड़े लोगों का सम्मान करें।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। 04 फरवरी से राहु एवं गुरु की युति आपके कार्यों में रुकावटें डाल सकती है। इस समय के अंतराल में आप कुछ परेशान हो सकते हैं परन्तु गुरु के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपने व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। आप सफलता पूर्ण रूप से प्राप्त करेंगे आपकी आंतरिक क्षमता, इच्छा शक्ति, संतुलन और दृढ़ता से अपने काम को आगे ले जाएंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। केवल आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ना है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होने के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। आपके अन्दर संतुष्टि और जीत की भावना बना रहेगी।

23 सितम्बर के बाद व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है आपका धैर्य ही आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और आप हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए थोड़ा चिंताजनक हो सकता है क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर अप्रैल तक अच्छा नहीं है। मई से आपका समय काफी अच्छा हो रहा है। आप को कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। आप अपनी समझ का सही उपयोग करेंगे आपकी राह में आने वाले हर अवसर का लाभ उठाने के लिए आपको सही और गलत की परख होगी।

सितम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें, किसी को उधार पैसा न दें और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। यह बढ़ोत्तरी विवाह या जन्म के माध्यम से हो सकती है। आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी।

सामाजिक उन्नति के लिए भी समय बहुत अच्छा नहीं है। आपकी धर्मपत्नी का

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

स्वास्थ्य अचानक बिगड़ सकता है या उनके साथ आपका वैचारिक मदभेद हो सकता है। मई से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। आपके पिता के लिए यह समय काफी शुभ है।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिसके कारण आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं परन्तु अप्रैल के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की स्वास्थ्य संबंधित परेशानी कम होगी और शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। गर्भाधान के लिए अच्छा समय चल रहा है। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

23 सितम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः उनको मन को एकाग्र कर शिक्षा के प्रति विशेष ध्यान देना चाहिए। खान-पान पर विशेष ध्यान दें, नहीं तो स्वास्थ्य संबंधित परेशानी आ सकती है।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी या तली हुई वस्तुओं का सेवन कम करें। अप्रैल के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। सकारात्मक ऊर्जा व रोग प्रतिरोधक शक्ति में वृद्धि होगी।

वर्षान्त में गुरु ग्रह गोचर फिर से प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। व्यापारिक व्यक्तियों के लिए व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

अप्रैल के बाद विद्यार्थियों के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिक यात्रा का भी योग बन रहा है। यात्रा के दौरान किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com

17 अप्रैल के बाद द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी। इस यात्रा से आपको लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे। गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। 17 अप्रैल के बाद आप दान-पुण्य अधिक करेंगे धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। मन्त्र जप व साधना करेंगे साधु, संन्यासी एवं ईश्वर में आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधु, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें एवं शनि मन्त्र का जाप करें।



पंडित राकेश कुमार शर्मा ,पंडित रजत कौशिक

रोशनपुर प्रताप कोतवाली देहात नगीना बिजनौर

+918510924140,9690977419

rajatkaushik265@gmail.com